मंत्रदृष्टा, ब्रहर्षि,
पण्डित दीनदयाल उपाध्याय

परिवार एवं जन्म

पंडित दीनदयाल जी के दादा पण्डित हरीराम जी एक प्रख्यात ज्योतिषी थे और उनकी मृत्यु पर मथुरा तथा आगरा जिलों का समस्त कामकाज बन्द रहा। पण्डित जी मथुरा जिले के एक छोटे से ग्राम नगला चन्द्रभान के निवासी थे। प्रचलित भारतीय परम्परा के अनुसार इस परिवार ने कभी धन की चिन्ता नहीं की और पूरा परिवार अन्त तक एक कच्चे मकान, जिसे झोपड़ी ही कहना उपयुक्त होगा, में जीवन व्यतीत करता हुआ सदैव अत्यन्त दरिद्रता की अवस्था में बना रहा। पण्डित दीनदयाल जी के पिता श्री भगवती प्रसाद, जलेसर रोड, के स्टेशन मास्टर थे। पण्डित दीनदयाल जी की माता श्रीमती रामप्यारी देवी अपने पुत्र के जन्म के समय अपने पिता श्री चुन्नी लाल शुक्ल, जो जयपुर अजमेर रेल मार्ग पर धनकिया के स्टेशन मास्टर थे, के यहां थीं। यहीं पर 25 सितम्बर 1916:: विक्रम संवत् 1973, शालिवाहन शक 1638:: भाद्रपद आश्विन कृष्ण 13, सोमवार के दिन जन्म हुआ। दो वर्ष बाद श्रीमती रामप्यारी देवी के दूसरा पूत्र उत्पन्न हुआ जिसका नाम शिवदयाल रखा गया। शिवदयाल के जन्म के 6 माह बाद ही पिता का निधन हो गया। दोनों भाई अपनी माता के साथ अपने नाना के पास रहने लगे। पण्डित जी जब साढ़े छः वर्ष के थे उनकी माता का स्वर्गवास हो गया। पण्डित दीनदयाल उपाधयाय के बचपन का नाम दीना था।

माता–पिता की स्नेहिल छाया से वंचित दोनों भाईयों ने मां की मृत्यु के दो वर्ष बाद ही सितम्बर,1926 में अपने नाना की छत्रछाया भी खो दी। नाना की मृत्यु के पश्चात दोनों अनाथ बालक अपने मामा के आश्रय में पलने लगे। दीनदयाल जी इस समय 10 वर्ष के थे तथा सातवीं कक्षा में पढ़ रहे थे। सन् 1931 में 15 वर्ष की अवस्था में उनके पितृतुल्य मामा का भी देहान्त हो गया और उन्हें कोटा छोड़कर राजगढ़ आना पड़ा। शायद विधाता की इच्छा अनुसार दीनदयाल जी को पूर्णतया अनिकेत बनकर दारिद्र्य और अभाव का दुर्भाग्यपूर्ण जीवन ही व्यतीत करना था। 18वें वर्ष की अवस्था में जब 9वीं कक्षा में थे, 18 नवम्बर, 1934 को उनका भाई भी उनको छोड़कर इस संसार से विदा हो गया। अब वे अपनी वृद्धा नानी के पास आकर रहने लगे। उनके, अपने ममेरे भाइयों से बड़े स्नेहपूर्ण सम्बन्ध थे।